नीलबाग ट्रस्ट

(1983-84 तथा 1984-85 की वार्षिक रिपोर्टें)

अनुवाद : अशोक थपलियाल

नीलबाग शिक्षा-प्रयोग को आगे बढ़ाने के लिए 1974 में नीलबाग ट्रस्ट की स्थापना की गई । लेकिन ट्रस्ट लगातार विषम स्थितियों, विशेषकर वित्तीय समस्या से जूझता रहा । ट्रस्ट के एक दशक पूरा होने के उपरान्त जारी यह रपट एक स्वप्नदृष्टा के कार्यकलाप को जारी रखने के लिए की गयी जद्दोजहद का दस्तावेज है । यह रपट एक दशक बाद नीलबाग स्कूल में अध्ययनरत बालकों की शैक्षणिक प्रगति की तथा नीलबाग की प्रेरणा से एक दशक में आरंभ हुए स्कूलों की एक झलक भी देती है।

नीलबाग ट्रस्ट का पंजीकरण 1974 में एक परोपकारी शैक्षणिक ट्रस्ट के रूप में हुआ था । और इस तरह 1984 में इसके अस्तित्व का एक दशक पूरा हो गया। उसी वर्ष 8 अगस्त को ट्रस्ट के संस्थापक व प्रबंध ट्रस्टी डेविड ऑसबर्रो का बंगलौर में निधन हो गया। यह न केवल नीलबाग ट्रस्ट के लिए बल्कि, संपूर्ण शिक्षा जगत के लिए बहुत बड़ी हानि थी । उनकी कमी बहुत अखरती है।

डेविड ऑसबर्रो अपने जीवनकाल के अंतिम वर्ष में राष्ट्रीय शिक्षक आयोग में हो रहे कार्य से बहुत गहराई से जुड़े थे। वे तब पुस्तकें (जिनसे होने वाली आय से स्कूलों का खर्चा चलता है) लिखने में व्यस्त होने के साथ-साथ कई अन्य कामों में संलग्न थे। इसी दौरान उनका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया और अंत में एक महीना अस्पताल में बिताने के बाद, वे यह संसार छोड़कर चले गए।

यह लाजिमी था कि उनकी बीमारी के दौरान तथा राष्ट्रीय आयोग के साथ कार्य करने की व्यस्तता के कारण, नीलबाग ट्रस्ट से संबंधित कुछ प्रशासनिक मुद्दों से या तो उनका ध्यान हट गया या उन पर कोई कार्यवाही नहीं हो पाई ।

ट्रस्ट की कानूनी व वित्तीय स्थिति का समाधान करने में सात महीने लग गए । इस अवधि में हमें वकीलों व लेखाकारों के साथ विचार-विमर्श करने के लिए बंगलौर के कई दौरे करने पड़े तथा विभिन्न सरकारी विभागों के साथ काफी पत्र व्यवहार भी करना पड़ा। मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि आखिरकार चीजें साफ हो गई हैं तथा ट्रस्ट का कार्य बिना किसी अवरोध के चलना सुनिश्चित हो गया है ।

नीलबाग स्कूल

बच्चे

पिछले कुछ वर्षों से स्कूल संतोषजनक ढंग से चल रहा है। अपने जीवन के 12 वर्ष पूरे कर लेने के बाद स्कूल में ऐसे बच्चे हैं जिनकी उम्र स्कूल छोड़ने लायक है । 1984-85 में तीन नए बच्चों ने स्कूल में प्रवेश लिया । इन्हें मिलाकर कुल संख्या अब 25 हो गई है । इनमें 12 लड़के व 13 लड़कियां हैं । इस स्कूल में सबसे कम उम्र का बच्चा टिमॉथी (3 वर्ष) तथा बड़ी उम्र की छात्रा लक्ष्मी देवी (21 वर्ष) है ।

दो बच्चों ने स्कूल छोड़ दिया है और वे दोनों ही लड़कियां हैं। एक को अपनी मां की असमर्थता के कारण घर व खेती के काम की जिम्मेदारी संभालनी पड़ी, जबकि दूसरी की शादी हो गई। शादीशुदा लड़की पिछले दो वर्ष से डिस्पेंसरी में पेनी की मदद करने के साथ-साथ स्कूल में पार्ट टाइम पढ़ाई भी कर रही है ।

नवंबर 1984 में चार छात्रों ने आंध्र प्रदेश बोर्ड से सैकण्डरी स्कूल सर्टिफिकेट (एस.एस.सी.) की परीक्षा दी जबकि एक छात्रा बी.ए. प्रथम वर्ष तथा दो छात्रों ने बी.ए. द्वितीय वर्ष की परीक्षा दी। बी.ए. की परीक्षाएं बी.टी. कॉलेज, मदनापल्ली में होती हैं तथा वैंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति प्रश्नपत्र तैयार करता है । ये सभी छात्र-छात्राएं निजी (प्राइवेट) परीक्षणार्थियों के रूप में सम्मिलित होते हैं ।

एस.ए.ए.सी. परीक्षा देने वाले चार लड़कों (ये पहली बार किसी परीक्षा में बैठे थे) में से तीन पास हुए जिनमें एक को प्रथम श्रेणी तथा दो को द्वितीय श्रेणी मिली, चौथा छात्र दो प्रश्नपत्रों में अनुत्तीर्ण रहा तथा वह अप्रैल 1985 में दुबारा परीक्षा दे रहा है । एक विद्यार्थी, प्रसाद, जिसने 1983 में बी.ए. करने के बाद स्कूल छोड़ दिया था, पिछले साल से दिल्ली के पास एक एस.ओ.एस. ग्राम में कार्य कर रहा है । उसे हाल ही में एक्शन एड नामक बाल प्रायोजक संगठन ने अपने द्वारा चलाई जा रही कई विकास योजनाओं में एक मे से प्रोजेक्ट अधिकारी की नौकरी का प्रस्ताव दिया था। उसने 1 अप्रैल से यह काम शुरू कर दिया है ।

मार्च 1984 में एस.एस.सी. पास करने वाली छात्रा संपूर्णा को इंटरमीडिएट साइंस की पढ़ाई के लिए बंगलोर के महारानी कॉलेज में प्रवेश मिल गया है ।

वह डॉक्टर बनना चाहती है । एस.एस.सी. में उसने बहुत अच्छे अंक (74 प्रतिशत) प्राप्त किए।

दो अन्य छात्र, जिन्होंने नवंबर ' 84 में एस.एस.सी. परीक्षा पास की, आजकल बंगलोर में नौकरी कर रहे हैं । उनकी इच्छा अपने जीवन-यापन के लिए नौकरी करने की थी तथा साथ ही वे सांध्यकालीन कॉलेज में पढ़ाई जारी रखना चाहते थे । पर शेखर को कृष्णमूर्ति फाउंडेशन, ब्रुकवुड, इंग्लैण्ड में छात्रवृत्ति मिल गई है जबकि, रामचंद्रन को इंटरनेशनल ट्रेवलिंग स्कूल में जगह मिल गई है । दोनों पाठ्यक्रम सितंबर 1985 में शुरू होंगे ।

स्टाफ

1982 में इंद्राणी की शादी होने व स्कूल छोड़ने के बाद से हमारे यहां शिक्षकों का आना-जाना लगा रहा है। हालांकि 1983 में वह कुछ समय के लिए वापस आ गई थीं । रेड्डेम्मा तथा शंकरा ने 1983 में हमारा स्कूल छोड़ा तथा उसके बाद शिक्षिक की नौकरी कर ली। वे अब मदनापल्ली के पास स्थित ऋषि वैली रूरल स्कूल में काम कर रहे हैं । इस समय श्रीलता हमारे साथ शिक्षिका के रूप में करीब एक साल से हैं। सितंबर 1984 में हमें 6 महीने तक एक युवा स्वयंसेवी सुए वाल्मस्ले का साथ मिला । वह पेशे से तो पत्रकार हैं, लेकिन शिक्षण कार्य में हाथ बंटाने के लिए नील बाग आईं तथा एक साल तक यहां रुकने की संभावना है ।

शिक्षक तथा स्वयंसेवी शिक्षकों के अलावा स्टाफ के अन्य सदस्य हैं डोरीन ऑसबर्न, पैनी तथा स्वयं मैं । बढ़ईगिरी का सारा काम करने व देखने वाला नरसिम्हुलू अभी तक हमारे साथ है । उससे हमें बहुत मदद मिलती है । मैकेनिक व ड्राइवर राजू ने पिछले सालभर हमारी बहुमूल्य मदद की है ।

स्कूल की कार्य-प्रणाली तथा कार्यक्रम 'नीलबाग' नाम पुस्तिका के अनुसार चल रहे हैं, जिसका प्रकाशन पिछले वर्ष हुआ था। पाठ्यक्रम में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं किया गया है । 1985 की एस.एस. सी. परीक्षाओं में किसी भी छात्र के बैठने की संभावना नहीं है पर 1986 में दो छात्र तैयार हो सकते हैं । इस स्कूल में अब नौ छात्र ऐसे हैं जिनकी उम्र सात वर्ष से कम है ।

विकासना

श्याम और लीला पवार के खेत पर स्थित स्कूल, जो मालती (1975-77 के बीच नीलबाग में प्रशिक्षित) द्वारा चलाया जा रहा है, अच्छी प्रगति कर रहा है। मालती यहां इस स्कूल के शुरू होने के समय से ही है । अब इस स्कूल में 24 बच्चे हैं तथा मालती के अलावा नागमणि व लक्ष्मी शॉ दो अन्य शिक्षिकाएं हैं। तीन साल से अधिक पढ़ाने के बाद, लक्ष्मी शॉ ने अप्रैल 1985 में स्कूल छोड़ने का निर्णय ले लिया । वह बच्चों को पढ़ाने के बजाय अब कुछ और करना चाहती है ।

इस स्कूल में सबसे कम उम्र का बच्चा 4 साल का तथा सबसे अधिक का 16 साल का है । मालती को आशा है कि 1986 में कुछ बच्चों को सातवीं कक्षा की परीक्षा दिला पाएगी।

स्कूल के बारे में एक अलग रिपोर्ट भी उपलब्ध है जिसमें पिछले साल के दौरान की गतिविधियों का और अधिक विवरण दिया गया है ।

सुमावनम

1982 में शुरू हुआ यह स्कूल नरसिम्हन और ऊषा चला रहे हैं, यह नीलबाग से आठ किलोमीटर दूर सड़क के पास स्थित है ।

1982 से 84 के बीच शिक्षकों के लिए एक घर, कामगर के लिए एक घर, स्कूल भवन तथा एक खुले कुंए के निर्माण में एक लाख रुपये से अधिक का व्यय हुआ । इस बारे में और अधिक वित्तीय विवरण यहां वित्त-खंड के अंतर्गत दिए गए हैं ।

मौजूदा समय में, इस स्कूल में 11 बच्चे हैं जिनमें सबसे कम उम्र वाला 4 साल तथा सबसे अधिक उम्र का विद्यार्थी 12 साल का है । विद्यार्थियों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ाई जाएगी । 1984 में स्कूल से संबंधित एक अलग रिपोर्ट तैयार की गई थी ।

दिगंतर

रोहित व रीना दिगंतर की जिम्मेदारी संभाले हुए हैं । अब इसे फेथ और जॉन सिंह वित्तीय मदद दे रहे हैं । जयपुर स्थित इस स्कूल को कुछ समय तक हमने आर्थिक मदद दी थी लेकिन,जब ट्रस्ट पर यह बोझ बहुत ज्यादा हो गया, तब फेथ व जॉन ने वित्तीय जिम्मेदारी एक बार फिर संभाल ली । हाल में लिखी गई एक रिपोर्ट के अनुसार, यह स्कूल बहुत अच्छी तरह से चल रहा है ।

पहाड़ी

कुर्ग में रिक और पूर्णा शॉ एक स्कूल चला रहे हैं जिसे ट्रस्ट धन नहीं देता लेकिन यह बहुत कुछ नीलबाग के ही पदचिन्हों पर चल रहा है । रिक ने यहां 6 महीने तक काम किया जबकि पूर्णा लगभग 4 वर्ष तक डेविड की सेक्रेटरी रही । उनके स्कूल में 17 बच्चे हैं तथा वहां काफी अच्छी प्रगति हुई है ।

सृजन

एलिएनर वाट्स, जो पहले नीलबाग में एक वर्ष से अधिक रहीं, अब नेल्लोर के पास अपना ही स्कूल चला रही हैं तथा उनके साथ एक दूसरे शिक्षक शिवराम हैं । इस स्कूल को वित्तीय सहायता एक्शन एड देता है तथा एक स्वतंत्र ट्रस्ट इसका संचालन करता है।

वित्त

1983-84 के दौरान ट्रस्ट के सामने पैसे की समस्या खड़ी हो गई । सुमावनम पर बहुत खर्च हुआ जिसमें से अधिकांश उधार लिया गया था । इसकी वजह यह थी कि ट्रस्ट के पास दो स्कूलों (नीलबाग को डेविड ऑसबर्रॉ स्वतंत्र रूप से धन देते थे) को चलाने के लिए पर्याप्त धन था लेकिन पूंजीगत व्यय के लिए कुछ नहीं था। अत्यधिक आर्थिक तंगी के कारण कुछ कटौतियां करनी पड़ीं और इसका सबसे पहला असर छात्रावास पर पड़ा । इस कारण नए प्रशिक्षणार्थियों को प्रवेश नहीं दिया गया तथा सितंबर 1984 में छात्रावास स्टाफ की सेवाएं समाप्त कर दी गईं । नीलबाग में पुस्तकालय भवन तथा सुमावनम में एक कार्यशाला/काष्ठशाला शेड की योजनाओं को कुछ समय के लिए छोड़ देना पड़ा ।

अगस्त 1984 में डेविड ऑसबर्रॉ की मृत्यु के बाद, उनके कई मित्र मदद के लिए आए तथा ट्रस्टियों के लगातार प्रयत्नों से पूंजीगत व्यय के लिए धन जुटाया गया । अब नीलबाग में स्कूलों के संचालन की लागतों को ट्रस्ट पूरा करता है तथा स्वतंत्र वित्तीय सहायता नहीं मिलती । ट्रस्ट अब तीन स्कूल चला रहा है ।

1981-82 के दौरान ट्रस्ट की चंदे से आय 6,375.00 रुपये थी । 1982-83 में यह बढ़कर 9206/- रुपये हो गई । इसी वर्ष 1982-83 के दौरान ही डेविड ने स्प्रिंग रीडर्स की रायल्टी ट्रस्ट को दान कर दी । इस तरह 1983-84 में आय 1,33,632.00 रुपये तक जा पहुंची । इस वर्ष (1984-85) भी ट्रस्ट की आय एक लाख रुपये से कहीं ज्यादा होगी ।

1982-83 तथा 83-84 के बीच, डेविड ने एक बड़ा ऋण लिया जो कि सुमावनम द्वारा सामान की खरीद पर तथा मकानों व एक कुंए के निर्माण कार्य में लगा । यह ऋण 85000 रुपये से अधिक हो गया तो 1984 अगस्त से अक्टूबर के बीच 23000 रुपये का एक और ऋण लेना पड़ा क्योंकि डेविड की मृत्यु के बाद, ट्रस्ट के खातों पर रोक लगा दी गई । अब, इस ऋण का अधिकांश चुका दिया गया है । करीब 44000 रुपये देने बाकी हैं ।

अगले वर्ष के दौरान ट्रस्ट की आय लगभग 10,000 रुपये प्रतिमाह होगी, यह निजी (स्वतंत्र) दानकर्ताओं से प्राप्त होने वाली चंदे की विभिन्न छोटी राशियों से अलग है । यह राशि तीनों स्कूलों को चलाने के लिए पर्याप्त है तथा साथ ही शेष ऋण की धीरे-धीरे अदायगी भी इससे की जा सकती है ।

1984 में यू.एन.आई.एस. स्कूल न्यूयॉर्क के बच्चों ने सुमावनम के लिए 1700 अमरीकी डॉलर इकट्ठा किये । यह राशि नारियल के पेड़ लगाने में खर्च की जाएगी तथा आशा है कि नारियल की खेती से प्राप्त आय से स्कूल चलाने में मदद मिलेगी।

इस ट्रस्ट को एक और बड़ा चंदा जॉन यंगर ट्रस्ट,इंग्लैण्ड से प्राप्त हुआ । बर्ले के लॉर्ड बल्फोर जो नीलबाग एजुकेशन फाउंडेशन के सदस्य हैं, के प्रयासों से हमारे लिए फंड एकत्र किए जा सके। उक्त फाउंडेशन इंग्लैण्ड में एक स्वतंत्र ट्रस्ट के तौर पर स्थापित किया गया ताकि हमारे अपने ट्रस्ट को व दूसरों को मदद दी जा सके।

ट्रस्ट को मिलने वाले विदेशी अशंदानों को अब मदनापल्ली के वैश्य बैंक में एक अलग खाते में जमा किया गया है । हमारे ट्रस्ट का खाता भी इसी बैंक में है ।

1970 के दशक में ट्रस्ट का एक खाता बंगलौर के इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस के परिसर में स्थित केनरा बैंक में चलता था। लेकिन, यहां से यह शाखा दूर होने से हमें असुविधा होती, अत: ट्रस्टियों ने यहां का खाता बंद कर दिया । अब हमारे केवल दो ही खाते हें। नियमित फंड (रुपयों में) के लिए खाता संख्या 4239 है जबकि, विदेशी अंशदान के लिए खाता संख्या 5002 हैं ।

1984 के दौरान भारत सरकार ने सभी ट्रस्टों के लिए एक परिपत्र (सर्कुलर) भेजा कि यदि ट्रस्ट के लिए विदेशी चंदा दिया जाता है तो नई दिल्ली में गृह मंत्रालय (एम.एच.ए.) की पूर्वानुमति लेनी होगी, हमने इस संदर्भ में आवेदन के साथ-साथ प्राप्त किए गए अंशदानों तथा उनके उपयोग संबंधी विवरण एम.एच.ए. को भेजे है ।

ट्रस्ट के प्रतिमाह खर्चों का मौटे तौर पर ब्यौरा इस प्रकार है-

वेतन व छात्रवृत्तियां	6000.00
संचालन व्यय	2000.00
योग	**8000.00 रुपये**

10,000 रुपये प्रति माह की आय के साथ, हमारे पास कर्ज चुकाने के लिए कुछ पैसा बच जाने की उम्मीद है ।

विदेशी अंशदान खाते का अधिकांश भाग सुमावनम में एक पंप तथा अन्य भवनों, विकासना में एक कमरे और अधिक नारियल पेड़ लगाने, भवनों की मरम्मत तथा तीनों स्कूलों के लिए पुस्तकें खरीदने में प्रयोग किया जायेगा।

ट्रस्ट के फंड करमुक्त हैं तथा सभी चंदों पर आयकर कानून की धारा 80 जी के तहत कर छूट मिलती है ।

पुस्तक दान

1984 में बेलिथा प्रेस लिमिटेड, इंग्लैण्ड (यूके) के मार्टिन पिक ने आइ.बी.बी.वाई. नामक संगठन के साथ मिलकर 150 डॉलर मूल्य के यू.एन.यू.एम.एस. (यूनेस्को की धन इकाइयां) ट्रस्ट को स्थानांतरित करने की व्यवस्था की । इस तरह, हमें सुमावनम के लिए इस मूल्य की पुस्तकें बंगलौर से मिल गईं, इसके लिए हम पिक के बहुत आभारी हैं ।

यू.एन.आई.एस.

न्यूयार्क स्थित संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय स्कूल के बच्चे लंबे समय से हमारे मित्र रहे हैं । 1984 में यू.एन.आई.एस. के एक शैक्षणिक सदस्य ब्रायन काहन कुछ दिन के लिए नीलबाग आए । वे यू.एन.आई.एस. में नीलबाग समिति के गठन में प्रेरणास्रोत रहे हैं । हमने उनके लिए दोम्बरपल्ली गांव में निर्मित 100 से अधिक लकड़ी के कंघे भिजवाये । ये बच्चों द्वारा धन एकत्रित करने में काम में लिए गये । चंदा देने वालों को वृक्ष प्रमाण-पत्र दिये जा रहे हैं । छात्रों ने एक नृत्य कार्यक्रम के जरिए व अन्य विभिन्न बिक्रियों से भी धन एकत्र किया । यू.एन.आई. एस. के बच्चों ने हमारे लिये पिछले दो वर्षों में 2000 डॉलर जमा किये हैं । हम काहन, अलिया खान तथा यू.एन.आई.एस. नीलबाग समिति के अन्य सदस्यों के प्रति कृतज्ञ हैं ।

भूमिदान

इस वर्ष (1985) फरवरी में बर्ले के लॉर्ड बेल्फोर नीलबाग के दौरे पर आए । हमारे तथा सुमावनम के विषय में एक लंबी वीडियो फिल्म बनाने के अलावा, वे अपने साथ जॉन यंगर ट्रस्ट (इंग्लैण्ड) के ट्रस्टियों से 1000 पाउंड का चैक भी लाये थे । मद्रास के पास लार्ड बेल्फोर की जो जमीन है उसे शीघ्र ही ट्रस्ट को दान कर दिया जाएगा । यह जमीन एक एकड़ है तथा इससे प्राप्त होने वाली राशि एक लाख रुपये से अधिक होगी। इस जमीन को ट्रस्ट को दान किए जाने के बाद बेचा जाएगा तथा प्राप्त राशि से स्कूल के लिए दूसरी जगहों पर अधिक उपयोगी जमीन खरीदी जायेगी । अभी यह जमीन जहां है, वह जगह किसी गांव से नजदीक नहीं है, अत: स्कूल के लिए अनुकूल नहीं कही जा सकती । लॉर्ड बेल्फोर की इच्छा है कि ट्रस्ट को कम से कम एक लाख रुपये मिलें और यदि जमीन की बिक्री से अधिक धन मिल जाता है तो शेष राशि किसी अन्य ट्रस्ट को दान की जा सकती है। पर यह सुनिश्चित करेंगे कि नीलबाग ट्रस्ट को इसमें से एक लाख रुपये तो मिलें ही। यह व्यवस्था भी हमारे लिए अनुकूल होगी क्योंकि इससे हमें कानूनी तथा सरकारी कागजी कार्यवाही कम करनी पड़ेगी ।

इंग्लैण्ड से प्राप्त फंड

फरवरी 1983 में नीलबाग के दौरे के बाद पेनी के पिता मेजर जॉन बर्टन ने इंग्लैण्ड में कई संगठनों को भारत में नीलबाग व उसके कार्यकलाप के बारे में बताया । उनका ध्यान मुख्यतया पेनी की डिस्पेंसरी तथा उसके काम पर केन्द्रित था । उन्होंने जो भी धन एकत्रित किया है, वह खासतौर से डिस्पेंसरी के लिए रखा गया है। जैसा कि आप जानते हैं, इस डिस्पेंसरी पर हम पैसा लगा रहे हैं लेकिन वह ट्रस्ट से अलग हिसाब है । ट्रस्ट की गतिविधियों के दायरे में आम जनता के लिए डिस्पेंसरी का संचालन शामिल नहीं है । यह ट्रस्ट शैक्षणिक ट्रस्ट है तथा हम केवल अपने स्कूल के बच्चों को ही चिकित्सा सुविधा देने में समर्थ हैं, आने वाले समय में ट्रस्ट के मूल भागिता-पत्र (डीड) में संशोधन कर ट्रस्टीगण इस डिस्पेंसरी की गतिविधियों को भी शामिल कर सकते हैं । विकल्प के तौर पर, डिस्पेंसरी को एक स्वतंत्र अलाभकारी संस्था या ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत करना भी संभव हो सकता है ।

निष्कर्ष

पिछले एक साल से, खासकर अगस्त में डेविड की मृत्यु के बाद, भारत में ट्रस्टियों व मित्रों ने खुद आगे आकर हमें कई तरह से मदद दी है । हालांकि, कई बार यह केवल प्रोत्साहन व सहानुभूति के रूप में ही थी लेकिन वह भी हम सभी के लिए अमूल्य मदद रही है ।

एक स्वप्नद्रष्टा ने जो कुछ सार्थक कार्य शुरू किया, उसे जारी रखा जाना चाहिए और हम भी वास्तव में वैसा ही करने की कोशिश कर रहे हैं । कुछ अन्य मित्रों ने स्वयं आगे होकर धन के रूप में दान दिया जो हमारे लिए बहुत मददगार साबित हुआ, खासतौर पर तब, जबकि ट्रस्ट की व्यवस्थाएं अस्त-व्यस्त थीं और हमें पांव जमाने की जरूरत थी । अपने उन सभी मित्रों, जिन्होंने अपनी सहानुभूति व्यक्त की, हम उनको हृदय से धन्यवाद देना चाहते हैं ।

नीलबाग ट्रस्ट में वर्तमान चार ट्रस्टी हैं :- निकालस ऑसबर्ॉ, एस. शेषाद्रि, विजय पदकी तथा एहसान हैदरी ।

ट्रस्ट के बैंकर हैं :
वैश्य बैंक
अप्पाराव स्ट्रीट,
मदनापल्ली,
आंध्र प्रदेश,
खाता संख्या : 4239
विदेशी अंशदान खाता संख्या: 5002

ट्रस्ट का पता है :-
नील बाग
रायलपड. पो. औ.,
श्रीनिवासपुर तालुक,
कोलार जिला,
कर्नाटक 563134

◆